श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ८

जनवरी - २०२३

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. जीव की शिवयात्रा पाँच.................... कारणों से ही सफल बनती है ।
२. तीसरे चौथे और पाँचवे समय में केवल.................... होता है ।
३. ....केवल प्रचारक नहीं थे आत्म साधक भी थे ।
४. शुभगति चाहिये तो ....करने ही पडेगें ।
५. शांति स्तव नाम का .... चमत्कारिक स्तोत्र बनाकर दिया ।
६. तीर्थंकर परमात्मा .... आयुष्य वाले होते हैं ।
७. केवली भगवंत को केवली...................... के पश्चात तीसरा सूक्ष्मक्रिया निवृति नाम का शुक्लध्यान होता है ।
८. ....यह जडता का मार्ग है ।
९. जैन श्रमण परंपरा में श्री पार्श्वचंद्रसूरिजी का नाम एक महान.................... के रुप में आता है ।
१०. अभव्य जीवों को मोक्ष है ही नहीं इसलिये जीव...................... के स्वभाववाला ही चाहिये ।
११. नाममंत्र वाले वाक्य प्रयोगो से तुष्ट होकर...................लोगों का हित करती है ।
१२. पृथ्वीकायादि दस पदों में से निकले हुए जीव तेउकाय और..................... में उत्पन्न होते हैं ।
१३. धर्मसुधारणा के प्रखर पुरस्कर्ता के रुप में जिन्हें विश्व के..................... में से गिना जा सके ।
१४. नियति वाद की प्ररुपणा करके...................गौशाला ने आजीविका मत का प्रवर्तन किया ।
१५. मेवाड में ....के पं. श्री. देवभद्रगणि विचरण कर रहे थे ।
१६. पं. श्री. जगच्चंद्रगणि ने आ. सोमप्रभसूरि की सेवा में रहकर जिनागमो का विशाल और .... ज्ञान संपादन किया ।
१७. जसवंत ने वि.सं. १६८८ में पूज्यपाद.................म.सा. के पास दीक्षा ली ।
१८. .... और .... सातों नरक में उत्पन्न हो सकते हैं ।
१९. जो.....................या अशुद्ध लगा उसकी निर्भिकता से उन्होंने अलोचना की ।
२०. महामारी के उपद्रव से मनुष्य टपोटप मरने लगे और संपूर्ण नगरी................ जैसी भयंकर लगने लगी ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. पासचंद ने किनके पास दीक्षा ली ?
२. काशी के विद्वानो ने श्री यशोविजयजी को सौ ग्रंथो की रचना करने पर कौन से दो बिरुद उन्हें दिये ?
३. जिनदेव ने किस आचार्य के पास दीक्षा ग्रहण की ?
४. "सन्मति तर्क" किसने लिखा है ।
५. काल, स्वभाव, नियति अनुकुल हो फिर भी अगर जीव क्या नहीं करेगा जिससे सिद्धि नहीं पा सकता ?
६. किस श्रावक को विज्ञाप्ति पत्र के साथ नाडूल नगर श्री मानदेवसूरि के पास भेजा ?
७. सौभाग्य देवी के पुत्र का नाम क्या था ?
८. आचार्यश्री के तप और त्याग की प्रशंसा सुनकर कौन उनके दर्शन के लिये आये ?
९. तीर्थंकर प्रभु के कर्मक्षय से कितने अतिशय होते हैं ?
१०. मोक्ष प्राप्ति के लिये कौनसा आरा अनुकुल काल है ?
११. नारकी के जीव कभी भी अेकेन्द्रिय के साथ दुसरी किस गति में नहीं जाते ?
१२. केवली समुदघात कौन करते हैं ?
१३. श्री पार्श्वचंद्रसूरि के जीवन में कैसी आराधना गुंथी हुई थी ?
१४. धीमे धीमे दुनिया में क्या बढता हुआ दिखाई दे रहा है ?
१५. शरीर का निश्चल होना केवली भ. की दृष्टि से क्या है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) संख २) स्तौमि ३) पअेसु ४) यस्य ५) समन्वित ६) महीपीढे ७) सेसेसु ८) कृत्वा ९) सकल १०) दग
११) स्तोतुः १२) लभते १३) उद्यम १४) तं १५) वपुर्योगं १६) नुता १७) भास्कर १८) उववज्जंति १९) नियइ
२०) मन्थान

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) शुद्धिकरण	१) तीर्थंकर	६) आँवला	६) नवजागरण
२) मोक्ष प्राप्ति	२) नसें	७) पृथ्वीकाय	७) श्री पार्श्वचंद्रसूरि
३) क्रिया का पुनरुद्धार	३) राणा जैत्रसिंह	८) स्वभाव	८) नरक में उत्पन्न होते
४) मनुष्य	४) संयोग	९) वेदना	९) दस पद में आते
५) हीरा	५) मुख्यलक्ष	१०) अग्लान	१०) कषाय

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. प्रत्येक कार्य की सिद्धि में कितने कारण होते है ?
२. कितने कारण से जीव समुद्घात करता है ?
३. श्री जगच्चंद्रसूरि ने आघाटपुर में कितने दिगंबराचार्य के साथ वाद किया ?
४. पासचंद ने जब दीक्षा ली तब उनकी उमर कितनी थी ?
५. जसवंत कितने वर्ष का था जब उसे भक्तामर स्तोत्र आता था ?
६. केवल कार्मण योग होता है तब कितना समय केवली अणाहारी होते है?
७. इस अभ्यासक्रम में श्री शांतिनाथ के कितने विशेषण है ?
८. मुनि यशोविजयजी ने संस्कृत, प्राकृत और गुजराती में कितने ग्रंथो की रचना की थी ?
९. केवली समुद्घात की विधि में कपाट किस समय में संहरते हैं ?
१०. पृथ्वीकायादि दस पद में स्थावर कितने आते हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. देवता पर्याप्त बादर पृथ्वीकाय गति में जा सकते हैं ।
२. सूत्र और शास्त्र के अर्थघटन में भी काफी उलझनों का प्रवर्तन हो गया था ।
३. जीव ने चरमावर्त काल को पाया नहीं है तो भी उसकी मोक्ष प्राप्ति संभव है ।
४. संवत १६१३ में आ. पार्श्वचंद्रसूरि का देहान्त हुआ ।
५. शांति स्तव लेकर वीरदत्त नाडोल नगर पहुँचा ।
६. केवलज्ञान प्राप्त करते वक्त जिनका आयुष्य छः महिने से कम है उनके लिये समुद्घात की भजना है ।
७. पुरुषार्थ की गौणता प्रायः अशुभ कार्यो की तरफ होती है ।
८. सद्दालपुत्र ! आत्म वंचना से दूसरों की आंख में धूल डाली जा सकती है ।
९. उनावा में सोनी लोगों के ५०० घरों मे जैनधर्म स्वीकार किया ।
१०. श्रेष्ठि पूर्णदेव पोरवाल को सलक्षण, वरदेव और जिनजीत नामक तीन पुत्र थे ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. जिन याने सामान्य केवली उनमें इन्द्र समान वह "जिनेन्द्र" ।
२. स्वाध्याय व कायोत्सर्ग उनकी प्रमुख साधना थी ।
३. तभी अंतरीक्ष में से आवाज आया कि "तुम चिंता किस लिये करते हो" ?
४. श्रमण संघ में सभी को प्रिय ऐसे मणिरत्नसूरि के पास दीक्षा ग्रहण की ।
५. उपशम सम्घकत्व के काल में जीव को जिन-प्रणीत तत्वों पर दृढ और अचल श्रद्धा हो जाती है ।
६. आत्म प्रदेश फैलाये जाये तो कर्म की स्थिती अल्प हो जाती है ।
७. छद्मस्थ साधु का मन स्थिर होता, उसे ही ध्यान कहते हैं ।
८. अपनी हरेक प्रकार की भवितव्यता ज्ञानियों के ज्ञान में निश्चित है ।
९. जैन वाङमय में नव्यन्याय को प्रवेश कराने का मुख्य यश आपश्री के हिस्से में जाता है ।
१०. भगवान ! नियति के बल से बनते हैं । सारे पदार्थों की नियती स्वभाव है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. केवली समुद्घात २) पृथ्वीकाय दस पद के साथ उनकी गति-अगति समझाओ
३. सद्दालपुत्र व महावीर प्रभु की चर्चा ४) आ. जगच्चंद्रसूरि को हीरा व तपा का बिरुद कैसे मिला समझाओ
५. शांति स्तव में भ. शांतिनाथ को मिले विशेषण बताओ

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com